छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ सों लागी जंग।
हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग।। १०१ ।।

जब हिन्दू और मुसलमान श्री प्राणनाथजी से झगड़ा कर रहे थे तो उस समय छत्रसालजी आगे आये और दुनियां का साथ छोड़कर श्री प्राणनाथजी के हुकम को सिर चढ़ाया।

किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम।
दिया महंमद मेंहेदी ने, गिरो मोमिनों हाथ हुकम।। १०२ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी लेकर सब धर्मग्रन्थों के रहस्य खोल दिए और जागनी का काम मोमिनों को करने के लिए दिया।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १०२ ।।

खुलासा गिरो दीन का

ए देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान।
हक हादी गिरो अर्स की, सक भान कराऊं पेहेचान।। १ ।।

कुरान में लिखे के अनुसार मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) की जमात की हकीकत तुम देखो, पहचानो। श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ परमधाम के रहने वाले हैं। सब संशय मिटाकर उनकी पहचान कराता हूं।

हक सूरत हादी साहेद, मसहूद है उमत।
सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत।। २ ।।

पारब्रह्म की शक्ल है, वह निराकार नहीं है। इस बात की गवाही हादी श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियां दे रही हैं। यह पारब्रह्म के एकांत और उनके दिल की बात समझती हैं और कयामत के दिन की लीला को जानती हैं।

हक बका में जेता मता, सो छिपे ना मोमिनों से।
खेल में आए तो भी अर्स दिल, ए लिख्या फुरमान में।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम में जो कुछ न्यामत है उनकी सब जानकारी मोमिनों को है। वह खेल में आ गए हैं तो भी उन्हीं के दिलों को खुदा (पारब्रह्म) अर्श करके बैठे हैं, ऐसा कुरान में लिखा है।

लिख्या नामे मेयराज में, हरफ नब्बे हजार।
तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार।। ४ ।।

मेयराज नामा में रसूल साहब ने खुदा से नब्बे हजार हरफ सुने। लिखा है तीस-तीस हजार का अधिकार मुहम्मद की तीनों सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) को दिया है। (देखिए किस्सिुल्ल अबिया उर्दू (१३७६ हि. पृष्ठ ३५०-३५१)

एक जाहेर किए बसरिएं, दूजे रखे मलकी पर।
तीसरे सूरत हकी पे, सो गुझ खोल करसी फजर।। ५ ।।

रसूल साहब की बसरी सूरत ने कुरान की तीस हजार बातें जाहिर कीं। दूसरे तीस हजार का अधिकार मलकी सूरत को दिया गया जिन्होंने धर्मग्रन्थों के रहस्य तारतम ज्ञान की कुंजी से बताए। बाकी के तीस हजार छिपा रखे थे जो श्री प्राणनाथजी हकी सूरत खोलकर फजर जाहिर करेंगे।

Nijanand App

कही सूरत तीन रसूल की, हुई तीनों पर इनायत हक।
किया तीनों का बेवरा, हरफ नब्बे हजार बेसक।। ६ ।।

रसूल साहब की तीन सूरतें कही हैं और इन तीनों पर खुदा श्री राजजी महाराज की मेहरबानी हुई। जिससे इन तीनों सूरतों द्वारा नब्बे हजार की हकीकत जाहिर हो गई।

राह चलाई बसरिएं फुरमानें, दई कुंजी मलकी हकीकत।
हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत।। ७ ।।

बसरी सूरत रसूल साहब ने शरीयत का ज्ञान देकर खुदा के पूजक बनाकर दीन का रास्ता चलाया। दूसरी मलकी सूरत श्री देवचन्द्रजी (श्री श्यामा महारानी) को तारतम की कुंजी दी। हकी सूरत श्री प्राणनाथजी महाराज ने खुदा की सूरत का बयान किया और मारफत (विज्ञान का रास्ता) का ज्ञान जाहिर किया।

ए अव्वल कह्या रसूलें, होसी जाहेर बखत कयामत।
मता सब मेयराज का, करी जाहेर गुझ खिलवत।। ८ ।।

यह पहले से ही रसूल साहब ने कहा था कि कयामत के समय कुरान के सब भेद जाहिर हो जाएंगे। शबे मेयराज (दर्शन की रात्रि) में रसूल साहब कैसे पहुंचे और क्या बातें हुईं, उन सब छिपी बातों को हकी सूरत श्री प्राणनाथजी ने वह बातें और तीस हजार जो खिलवत (मूल-मिलावा) खाने की बात जाहिर करने का अधिकार श्री राजजी महाराज ने ही दिया था, उन सब मूल-मिलावे की बातों को जाहिर किया।

ए जो कागज वेद कतेब के, तामें जरा न हुकम बिन।
दुनियां सब तिन पर खड़ी, ए जो अठारे बरन।। ९ ।।

हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ चार वेद और मुसलमानों के चार कतेब (अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान ग्रन्थ) में खुदा के हुकम के बिना कुछ नहीं लिखा गया। यह सब अठारह वर्णों की दुनियां इन्हीं धर्मशास्त्रों के आधार पर खड़ी है।

कलाम अल्ला जो फुरमान, सो इन सबसे न्यारा जान।
ल्याया पैगंमर आखिरी, हक के कौल परवान।। १० ।।

अल्लाह की वाणी जो कुरान में है वह संसार के सभी ग्रन्थों से अलग है। आखिरी पैगम्बर रसूल साहब खुदा के हुकम से आए और उन्होंने संसार में खुदा के किए वायदे के अनुसार जाहिर किए।

कह्या महंमद का सब हुआ, जो काफर करते थे रद।
फिरवले सबन पर, महंमद के सब्द।। ११ ।।

मुहम्मद साहब ने जो भविष्यवाणी की थी उसे काफिर लोग नहीं मानते थे। अब श्री प्राणनाथजी ने आकर कुरान की सब भविष्यवाणी को सत कर जाहिर कर दिया।

इत मुनाफक खतरा ल्यावते, जो कुराने कही कयामत।
सो खास रूहें मोमिन आए, जाके दिल अर्स न्यामत।। १२ ।।

कुरान में कयामत के दिन की भविष्यवाणी की गई थी। बेईमान लोग उस पर संशय करते थे। अब जब अर्श से खासल खास रूह मोमिन आ गए हैं और जिन्हें अर्श की पूरी न्यामतों का पता है, तो अब संशय वाली सब बातें मिट गई हैं।

Nijanand App

ए देखो तुम बेवरा, कहावें बंदे महंमद।
सहूर ना करे बातून, कोई न देखे छोड़ हद।। १३ ।।

जो मुहम्मद के बन्दे मुसलमान कहलाते हैं, उनकी हकीकत देखो। निराकार हवा (शून्य) को छोड़कर आगे कोई नहीं देखता, इसलिए कुरान की बातूनी बातों का अर्थ उन्हें पता नहीं चलता।

ए दुनियां किन पैदा करी, कौन ल्याया हूद तोफान।
किन राखी गिरो कोहतूर तले, किन डुबाई सब जहान।। १४ ।।

इस दुनियां को किसने पैदा किया, किसने हूद-तोफान में कोहेतूर (गोवर्द्धन पहाड़) को उठाकर ब्रह्मसृष्टि को बचाया और संसार को डुबाया?

किन फेर दुनी पैदा करी, फेर कौन ल्याया नूह तोफान।
किन ऐसी किस्ती कर तारी गिरो, किन डुबाई सब कुफरान।। १५ ।।

फिर दुबारा दुनियां किसने बनाई और फिर नूह-तोफान में नाव पर जमात को बिठाकर बचाया और संसार का प्रलय कर दिया।

तीन बेटे नूह नबीय के, बेर तीसरी दुनी इनसे।
हक फुरमान गिरो ऊपर, महंमद ल्याए इनमें।। १६ ।।

नूह नबी के तीन बेटे (श्याम, हाम, याफिस) बताए गए हैं। जिनसे तीसरी बार दुनियां बनी और इनकी दुनियां में ही रसूल साहब कुरान लेकर आए।

कह्या स्याम बाप उन लोकों का, रूम फारस आरबन।
सब तुरकों बाप याफिस, हाम बाप हिंदुस्तान सबन।। १७ ।।

नूह पैगम्बर के बेटे स्याम (श्री कृष्णजी) रोम, फारस और अरब के बाप हैं और तुर्किस्तान के बाप याफिस (कल्याणजी) हैं तथा हिन्दुस्तान के बाप हाम (श्री बलदाऊजी) हैं।

कुरान हकीकत न खुली, ना स्याम रसूल पेहेचान।
ना पावें महंमद गिरो को, जो सौ साल पढ़े कुरान।। १८ ।।

दुनियां वालों को कुरान के रहस्यों का पता नहीं और न स्याम और रसूल की पहचान हुई और न मुहम्मद गिरोह मोमिन की जमात की हकीकत का पता चला। चाहे कोई सौ साल तक कुरान पढ़े।

ए सब मुखथें कहें महंमद को, ए अव्वल ए आखिर।
बड़े काम नजीकी हक के, ए किन किया महंमद बिगर।। १९ ।।

यह सब लोग मुहम्मद खुदा का ज्ञान देने वाला पहला रसूल है और यही वक्त आखिरत को पारब्रह्म के सारे बड़े काम करेंगे, मुख से कहते हैं अब विचार करो कि आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना यह हक श्री राजजी महाराज के बड़े काम कौन कर रहा है?

एक खुदा हक महंमद, हर जातें पूजें धर नाऊं।
सो दुनियां में या बिना, कोई नहीं कित काऊं।। २० ।।

पारब्रह्म सारे संसार का एक है और मुहम्मद ने जो बातें कही हैं वह सब सत्य हैं। हर जाति वाले पारब्रह्म को अलग-अलग नामों से पूजते हैं। खुदा और मुहम्मद के सिवाय दूसरा कोई नहीं है।

Nijanand App

ओ खासी गिरो और महंमद, आए दो बेर माहें जहूदन।
गिरो बचाई काफर डुबाए, ए काम होए ना महंमद बिन।। २१ ।।

वह खासल खास गिरोह मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) और मुहम्मद (श्री कृष्ण) दो बार हिन्दुओं में आए जिन्होंने मोमिनों को बचाया और दुनियां को डुबाया। इतना बड़ा काम मुहम्मद (श्री कृष्ण) के बिना कोई नहीं कर सकता।

सब जातें नाम जुदे धरे, और सबका खावंद एक।
सबको बंदगी याही की, पीछे लड़े बिन पाए विवेक।। २२ ।।

सब जातियों ने अलग-अलग नाम रखकर उस एक पारब्रह्म की पूजा की। सबका उद्देश्य उस एक की पूजा करने का था, परन्तु बाद में बिना विवेक के लड़-झगड़कर जुदा-जुदा धर्मों में बंट गए।

रूहें अर्स से लैलत कदर में, हक हुकमें उतरे बेर तीन।
सुध खास गिरो न महंमद, कहे हम महंमद दीन।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से ब्रह्मसृष्टियां लैल तुल कदर की रात में हक के हुकम से तीन बार खेल में उतरीं। यह दुनियां वाले अपने को रसूल साहब का मानने वाला कहते हैं। इनको खास गिरोह ब्रह्मसृष्टि और मुहम्मद साहब की किसी की भी पहचान नहीं है।

एक बेर गिरो हूद घर, बेर दूजी किस्ती पर।
तीसरी बेर मास हजार लो, सदी अग्यारहीं हिसाब फजर।। २४ ।।

एक बार हूद नबी के घर, अर्थात् बृज में नंदजी के घर गोवर्द्धन पहाड़ के नीचे जमात को बचाया। दूसरी बार नूह की किश्ती से पार उतारा। योगमाया को किश्ती बनाकर वृन्दावन में ले गए। तीसरी बार जागनी के ब्रह्माण्ड में हजार महीने की रात्रि हुई जो रसूल साहब की ग्यारहवीं सदी है। जिसमें सब भेदों को खोलकर ज्ञान का सवेरा हुआ है।

जाहेर पहचान कही रसूले, गिरो खासी और कयामत।
सहूर करें दिल अकलें, तो दोऊ पावें हकीकत।। २५ ।।

रसूल साहब ने खास गिरोह मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) की और कयामत की स्पष्ट शब्दों में जानकारी दी है। यदि अकल और दिल और विचार करके देखे तो इन दोनों (कयामत और मोमिनों) के भेद को दुनियां समझे।

हजार साल कहे दुनी के, सो खुदाए का दिन एक।
लैलत कदर का टूक तीसरा, कह्या हजार महीने से विसेक।। २६ ।।

दुनियां के हजार साल खुदा के एक दिन के बराबर हैं और लैल तुल कदर का तीसरा हिस्सा, अर्थात् जागनी की लीला हजार महीने से अधिक कही है।

सौ साल रात अग्यारहीं लग, एक दिन के साल हजार।
अग्यारै सदी अंत फजर, एही गिरो है सिरदार।। २७ ।।

सौ साल की एक रात, अर्थात् ग्यारहवीं सदी रात्रि है और दसवीं सदी तक एक हजार वर्ष का दिन है। ग्यारहवीं सदी के अन्त में मोमिनों के सिरदार श्री प्राणनाथजी के द्वारा ज्ञान का सवेरा होगा।

Nijanand App

रूहें गिरो तब इत आईं नहीं, तो यों करी सरत।
कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत।। २८ ।।

रसूल साहब के समय में रूहें (ब्रह्मसृष्टियां) नहीं आई थीं, इसलिए खुदा ने वायदा किया है कि हम कल मोमिनों के साथ दुनियां को कायम (अखण्ड) करने आएंगे।

जब एक रात एक दिन हुआ, सो एही फरदा कयामत।
अहेल किताब मोमिन कहे, हादी कुरान सूरत।। २९ ।।

जब हजार वर्ष का एक दिन बीता और सौ बरस की एक रात्रि बीती, अर्थात् ग्यारहवीं सदी समाप्त होने पर कायमी का दिन बताया है। कुरान के वारिस मोमिन कहे हैं। हादी श्री प्राणनाथजी और उनके साथियों को कुरान के ज्ञान की पहचान हुई, इसलिए यह वारिस कहलाए।

आए वसीयत नामें मक्के से, उठया कुरान दुनी से बरकत।
सो अग्यारै सदी अंत उठसी, रूहें हादी कुरान सोहोबत।। ३० ।।

मक्का से औरंगजेब बादशाह के पास वसीयतनामे लिखकर आए कि कुरान में दिए इशारों के अनुसार मक्का से कुरान और बरकत उठ गई है। कुरान में जो ग्यारहवीं सदी के अन्त में बरकत और कुरान के उठने का संकेत दिया था वह उठकर हादी श्री प्राणनाथजी और रूहों (ब्रह्मसृष्टियों) के पास पहुंच गई।

झण्डा ईसे मेहेंदी ने, खड़ा किया है जित।
सो आई इत न्यामतें, हक हकीकत मारफत।। ३१ ।।

हिन्दुस्तान में ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी, देवचन्द्रजी) ने श्री प्राणनाथजी के तन में बैठकर पन्नाजी में जहां दीन का झण्डा खड़ा किया है वहीं सब न्यामतें जो वसीयतनामे में लिखी हैं, आईं। वहीं अन्त में पारब्रह्म की हकीकत और मारफत का ज्ञान भी आया, जिसकी भविष्यवाणी कुरान में कही है।

कही थी बरकत दुनी में, सो दुनियां माफक ईमान।
सो भी जाहेर ठौर सबे उठे, हिन्दू या मुसलमान।। ३२ ।।

दुनियां में दुनियां वालों को उनके ईमान के माफिक ही बरकत मिलने का लेख है। अब दुनियां वालों का ईमान ही न रहने से हिन्दू या मुसलमानों के जाहिरी ठिकानों से बरकत और शफकत उठकर इमाम मेंहदी के पास चली गई।

जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर।
खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर।। ३३ ।।

जब मुसाफ हादी और गिरोह मोमिनों की जमात अपने घर लौट जाएगी तो पीछे दुनियां नहीं रहेगी। यह खेल जिनके वास्ते बनाया है वह अपने समय पर जागृत हो जाएंगे।

देखो तीन बेर गिरो वास्ते, हक हुए मेहेरबान।
राख लई गिरो पनाह में, डुबाए दई सब जहान।। ३४ ।।

देखो, पारब्रह्म ने अपनी उम्मत (ब्रह्मसृष्टियों) के वास्ते तीन बार मेहरबानी की। उन्होंने अपनी गिरोह को चरणों में लेकर दुनियां को डुबो दिया।

Nijanand App

रसूल आए जिन बखत, कंगूरा गिरया बुतखाने का।
तब लोगों कह्या रसूल का, जाहेर होने का माजजा।। ३५ ।।

जब मक्का में बुतखाने का कंगूरा गिरा, तब लोगों ने कहा यह रसूल साहब के जाहिर होने का निशान है।

अब देखो माजजा रब आखिरी, सब उठाए सिजदे ठौर।
रोसन हुआ दिन अर्स बका, कोई ठौर रही ना सिजदे और।। ३६ ।।

अब आखिरी में पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी आ गए हैं। अब उनके चमत्कार को देखो। इन्होंने अखण्ड घर परमधाम और हक श्री राजजी महाराज का ज्ञान देकर दुनियां के बन्दगी के ठिकाने समाप्त कर दिए।

सिपारे ओगनतीस में, इन विध लिखे कलाम।
अर्स बका पर सिजदा, करावसी इमाम।। ३७ ।।

कुरान में उन्तीसवें सिपारे में लिखा है कि अखण्ड घर परमधाम पर सिजदा इमाम मेंहदी कराएंगे।

और आगे बुत बोले हुते, सांचा आखिरी पैगंमर।
फुरमान ल्याया हक का, तुम झूठे हो काफर।। ३८ ।।

जब रसूल साहब दुनियां में आए थे। तो बुतों (मूर्तियों) से आवाज आयी थी कि यह खुदा के पैगाम लाने वाले आखिरी पैगम्बर हैं और खुदा से कुरान लेकर आए हैं। इन बातों पर संशय लाने वाले काफिर हैं।

अब बेत अल्ला पुकारत, भेजी साहेदी नामे वसीयत।
तो भी दुनी ना देखहीं, जो ऐसे सौं खाय लिखे सखत।। ३९ ।।

अब अल्लाह के घर मक्का से वसीयतनामो के द्वारा आवाज आ रही है कि इमाम मेंहदी हिन्दुस्तान में प्रगट हो गए हैं। वसीयतनामे में यह हकीकत सौगन्ध खाकर लिखी है। फिर भी दुनियां (जाहिरी मुसलमान) इनको देखकर भी नहीं समझती।

मक्के मदीने दीन का, खड़ा था निसान।
सो हुआ फुरमाया हक का, करसी दज्जाल कुफरान।। ४० ।।

मक्का और मदीने में रसूल साहब ने दीन का झण्डा खड़ा किया था और कहा था कि शैतान दज्जाल यहां पर पाप फैलाएगा। जैसा कुरान में कहा था, वैसा ही हो गया।

तो जोरा किया दज्जाल ने, लोकों छुड़ाए दिया आकीन।
अग्यारै सदी के आखिर, रह्या न किन का दीन।। ४१ ।।

कुरान में लिखे के अनुसार ही मक्का के लोगों में से यकीन उठ गया। दिलों में दज्जाल (बेईमानी) आ गया। ग्यारहवीं सदी के अन्त में इमाम मेंहदी के प्रगट होने पर संसार में झूठे रूढ़िवादी धर्म समाप्त हो गए।

गजब हुआ दुनी पर, खैंच लिया फुरमान।
हादी भेजे नामे वसीयत, इत रह्या न किनों ईमान।। ४२ ।।

ऐसा अचम्भा हो गया कि कुरान के ज्ञान की शक्ति इमाम साहब ने खींच ली और उसी की गवाही में वहां से वसीयतनामे भिजवाए, कि शरा और हुकूमत के बादशाह को यकीन आ जाए। फिर भी लोगों को विश्वास नहीं आया। वह ईमान से गिर गए।

Nijanand App

आए देव फुरमाए हक के, बीच हिन्दुस्तान।
करो सबों पर अदल, मार दूर करो सैतान।।४३ ।।

कुरान में लिखे के अनुसार पारब्रह्म अक्षरातीत ने हिन्दुस्तान में इमाम मेंहदी और ब्रह्मसृष्टि को भेजा और हुकम दिया कि बेईमानी रूपी शैतान को मार कर दूर भगा दो और सभी का न्याय करके एक दीन में लाओ।

आया बीच हिन्दुअन के, मुसाफ हक हुकम।
सो खलक रानी गई, जिन छोड़े हक हादी कदम।।४४ ।।

इसी के अनुसार हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के अन्दर इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के पास कुरान की शक्ति श्री राजजी के हुकम से आ गई। जो लोग हक के हुकम से इमाम मेंहदी पर यकीन नहीं लाए वह लोग रद्द हो गए।

फुरमान दूजा ल्याया सुकदेव, सो ढांप्या था एते दिन।
सो प्रगटया अपने समें पर, हुआ हिन्दुओं में रोसन।।४५ ।।

दूसरा फुरमान शुकदेव मुनि लाए जो आज दिन तक छिपा हुआ था। स्वामी श्री प्राणनाथजी के आने पर हिन्दुओं के अन्दर उसका भी ज्ञान जाहिर हुआ।

परमहंस जाहेर भए, जाहेर धाम धनी अखंड।
कुली कालिंगा मारिया, मुक्त दई ब्रह्मांड।।४६ ।।

भागवत में लिखे के अनुसार (भविष्य पुराण खण्ड दो भगवदावतार आदि वृतान्त श्लोक, २५, २६, २७ पन्ना १९४, १९५, प्रकाशक संस्कृति संस्थान, वेद नगर बरेली) ही पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत अपनी आत्माओं के साथ जाहिर हो गए। कलियुग की आसुरी बुद्धि को हटाकर संसार के जीवों को मुक्ति दी।

झूठ अमल सबे उठे, आए साहेब बीच हिंदुअन।
दाभा जाहेर हुई मक्के से, आए हिंद में मेंहेदी मोमिन।।४७ ।।

पारब्रह्म जब हिन्दुओं के बीच प्रगट हो गए तब भारत में फैले हुए कर्मकाण्ड पर आधारित धर्म समाप्त हो गए। इस तरह से कुरान के अनुसार जब हिन्दुओं में इमाम मेंहदी प्रगट हो गए तो मक्का में दंगे फसाद शुरू हो गए।

दो बेर डुबाई जहान को, गिरो दो बेर बचाई तोफान।
तीसरी बेर दुनी नई कर, आखिर गिरो पर ल्याए फुरमान।।४८ ।।

पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने दो बार ब्रह्मसृष्टियों को प्रलय में से निकाला और संसार को डुबाया। अब तीसरी बार इस सृष्टि की रचना करके ब्रह्मसृष्टि के लिए फुरमान लेकर इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी आए।

यों अर्स गिरो जाहेर करी, माहें कुरान पुरान।
किन पाई न सुध रूहें अर्स की, आप अपनी आए करी पेहेचान।।४९ ।।

कुरान और पुराण दोनों के अनुसार ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि जाहिर हुए। संसार में अभी तक किसी को आत्माओं की और अखण्ड घर (परमधाम) की पहचान नहीं थी, इसलिए स्वयं पारब्रह्म ने आकर अपनी पहचान बताई।

Nijanand App

एही खासी गिरो हादी संग, एही फरदा कयामत।
जाहेर देखावे नामे वसीयत, कछू छिपी न रही हकीकत।।५० ।।

यही ब्रह्मसृष्टि खास गिरोह इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के साथ आई। इसी को फरदा रोज कयामत का जाहिर होना बताया है। वसीयतनामे में भी यही लिखा है। अब यह सच्चाई छिपी नहीं रही।

सो पेहेचान क्यों कर सके, जो पकड़े पुलसरात।
छोड़े न वजूद नासूती, जान बूझ के कटात।।५१ ।।

संसार की जीवसृष्टि जो कर्मकाण्ड की राह पर चलती है, वह इनकी पहचान कैसे कर सकती हैं। यह अपने मिटने वाले तनों में ही लगे हैं और जान-बूझकर कर्मकाण्ड की राह पर चलकर नरकगामी बनते हैं।

नासूत ऊपर लोक जानत, आसमान सात में मलकूत।
तिन पर हवा जुलमत, तिन पर नूर बका जबरूत।।५२ ।।

मृत्युलोक से सातवें लोक में बैकुण्ठ है और उसके ऊपर निराकार का आवरण है तथा उसके ऊपर अखण्ड अक्षरधाम है।

बुजरकी पैगंमरों, पाई जबराईल से।
हुए नजीकी हक के, सो सब न्यामत दई इनने।।५३ ।।

सभी पैगाम देने वाले अवतारी पुरुषों ने जबराईल फरिश्ता (अक्षर ब्रह्म के जोश का फरिश्ता) से ही महानता पाई है। यह फरिश्ता हक के नजदीकी होने के कारण ही पार का ज्ञान लाकर संसार में दे सका।

सो जबराईल जबरूत से, आगे लाहूत में न जवाए।
नूरतजल्ला की तजल्ली, पर जलावत ताए।।५४ ।।

यही जबराईल फरिश्ता अक्षर से आगे परमधाम नहीं जा सका, क्योंकि नूर तजल्ला की तजल्ली, अर्थात् अक्षरातीत के तेज से उसके पर जलते हैं।

जबरूत ऊपर अर्स लाहूत, इत महंमद पोंहोंचे हजूर।
रद बदल बंदगी वास्ते, करी हकसों आप मजकूर।।५५ ।।

अक्षर के पार परमधाम है जहां पर मुहम्मद साहब पारब्रह्म के धाम पहुंचे। उन्होंने दुनियां के वास्ते बन्दगी में ढील देने के लिए आग्रह किया।

ल्याए फुरमान इसारतें इत थें, सो नासूती क्यों समझाए।
मारफत अर्स अजीम में, ए पुलसरातें अटकाए।।५६ ।।

इस परमधाम से रसूल साहब कुरान में खुदा की इशारतें लेकर आए जो दुनियां वाले कैसे समझ सकते हैं। खुदा की पहचान कराने वाला मारफत का ज्ञान परमधाम ले जाता है और बाकी ज्ञान कर्मकाण्ड के रास्ते चलकर दुनियां रास्ते में ही रुक जाती है।

जाहेर लिखी आदम की, सब औलाद पूजे हवाए।
एक महंमद कहे मैं पोहोंचिया, नूर पार सूरत खुदाए।।५७ ।।

कुरान में साफ लिखा है कि आदि नारायण के बनाए जीव निराकार के पूजक होंगे। एक मुहम्मद कहते हैं कि मैं अक्षर पार परमधाम जाकर खुदा से मिला।

Nijanand App

दुनियां चौदे तबक में, किन सुरिया उलंघी ना जाए।
फना तले ला मकान के, ए तिनमें गोते खाए।।५८ ।।

चौदह लोकों की दुनियां में कोई सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप, डिवाइन लाइट) को ही पार नहीं कर सके। यह निराकार के नीचे ही नाशवान संसार में गोते खाते हैं।

हक सूरत किन देखी नहीं, है कैसी सुनी न किन।
तरफ न जानी चौदे तबक में, महंमद पोहोंचे ठौर तिन।।५९ ।।

पारब्रह्म के स्वरूप को किसी ने नहीं देखा और न उसके बारे में सुना। चौदह लोकों के किस तरफ वह है, इसका भी पता नहीं लग सका। उस ठिकाने पर मुहम्मद साहब मेयराज में पहुंचे।

करी महंमदें मजकूर तिनसे, सुने हरफ नब्बे हजार।
जहूद तिन साहेब को, कहे सुन्य निराकार।।६० ।।

खुदा के सामने पहुंचने पर मुहम्मद साहब ने नब्बे हजार हरफ सुने। उसी पारब्रह्म को हिन्दू लोग निराकार कहते हैं।

ए भी कहें हक की सूरत नहीं, जो कहावें महंमद के।
सोई सब्द सुन पकड़या, आगूं काफर केहेते थे जे।।६१ ।।

मुसलमान जो मुहम्मद के बन्दे हैं वह भी कहते हैं कि खुदा की सूरत नहीं है, जो पहले से ही काफिर कहा करते थे। वही सुनकर इन्होंने भी इसे निराकार मान लिया।

तो काहे को कहावें महंमद के, जो इतना न करें सहूर।
कौल महंमद रद होत है, जो हक सों किया मजकूर।।६२ ।।

दीन इस्लाम के कहलाकर भी इतना विचार नहीं करते कि इनको मुहम्मद साहब को मानने वाला कैसे कहा जाए, क्योंकि मुहम्मद साहब ने जो खुदा से नब्बे हजार हरफ सुने वह बात खुदा को निराकार मानने से गलत हो जाती है।

जासों पाई बुजरकी महंमदें, हक मिलेके सुकन।
सो सुकन टूटत है, कर देखो दिल रोसन।।६३ ।।

खुदा से साक्षात् बातें करने के कारण ही मुहम्मद पैगम्बरों में सबसे बड़े माने जाते हैं। दिल में विचार करके देखो खुदा को निराकार मानने से यह वचन झूठे हो जाते हैं।

काफर न माने हक सूरत, ताको कछू अचरज नांहें।
केहेलाए महंमद के पूजें हवा, ए बड़ा जुलम दीन माहें।।६४ ।।

काफिर लोग खुदा की सूरत को निराकार कहें तो कोई अचम्भे की बात नहीं है, परन्तु मुहम्मद के अनुयायी होकर निराकार को पूजें तो धर्म में इससे बड़ा पाप क्या हो सकता है?

कहे महंमद करूं मैं एक दीन, जिन कोई जुदे परत।
कुरान माजजा मेरी नबुवत, हुए एक दीन होए साबित।।६५ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैं सब संसार को एक पारब्रह्म का पूजक वक्त आखिरत के बनाऊंगा। उस समय तुम कोई अलग नहीं होना। तब कुरान के छिपे भेद इमाम मेंहदी खोलेंगे। तभी मेरी नबुवत (पैगम्बरी) सिद्ध होगी। तब सारी दुनिया एक धर्म को मानने लगेगी।

Nijanand App

तुम करत मुझसे दुस्मनी, मैं किया चाहों एक राह।
तो जुदे परत कई दीन से, जो दिलों अबलीस पातसाह।। ६६ ।।

अब जब मैं इमाम मेंहदी के रूप में सब संसार को एक रास्ते पर लाना चाहता हूं, तो तुम लोग तुम्हारे दिलों में शैतान होने से, सच्चे धर्म से अलग-अलग हो रहे हो।

कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित हुआ न चाहें।
लड़ फिरके जुदे हुए, जो बुजरक कहावें दीन माहें।। ६७ ।।

इससे ऐसा लगता है कि कुरान के मानने वाले ही नहीं चाहते कि इमाम मेंहदी कुरान के छिपे रहस्य खोलें और पैगम्बर रसूल साहब की बातें सिद्ध हों, इसलिए दीने-इस्लाम के लोग आपस में लड़-झगड़कर फिरकों में बंट गए।

आए रसूलें हक जाहेर किया, किया असौं का बयान।
हौज जोए बाग कई बैठकें, सब हकीकत ल्याया फुरमान।। ६८ ।।

रसूल साहब ने आकर क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की हकीकत बताई। परमधाम में हौज कौसर तालाब, श्री जमुनाजी तथा बाग-बगीचों में सुन्दर-सुन्दर बैठने के स्थान हैं, ऐसा कुरान में सारी हकीकत खोलकर बताया।

कहावें फिरके बुजरक, हुए आपमें दुस्मन।
महंमद मता अर्स बका, लिया जाए न हवा के जन।। ६९ ।।

अब सभी धर्मों के लोग अपने को बड़ा बताकर आपस में दुश्मनी करते हैं और इसलिए अखण्ड घर (परमधाम) का ज्ञान जो मुहम्मद ने आकर बताया, निराकार के पूजक जीव लेना नहीं चाहते।

जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लो मंहमद औरों बराबर।
दई कई बुजरकियां, लिखे लाखों पैगंमर।। ७० ।।

जब तक सारे संसार को पारब्रह्म की सूरत पर विश्वास नहीं आता, तब तक मुहम्मद भी दूसरे पैगम्बरों के समान ही हैं। वैसे दुनियां में लाखों पैगम्बर हैं (धर्माचार्य हैं) जिन्हें महानता प्राप्त है।

तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक।
हकें मासूक कह्या तो भी न समझें, क्या करे आम खलक।। ७१ ।।

यह दुनियां वाले रसूल को सब पैगम्बरों में बड़ा तभी मानेंगे जब उनको हक की पहचान हो जाएगी। कुरान में पारब्रह्म ने (खुदा ने) रूह अल्लाह को माशूक करके कहा है। फिर भी इस संसार के जीवों को समझ में नहीं आता कि खुदा की सूरत है।

जाहेर राह मारे दुस्मन, अबलीस दिलों पर।
जाहेरी इलमें नफा न ले सके, पेहेचान होए क्यों कर।। ७२ ।।

क्योंकि दुनियां वालों के दिलों में शैतान अबलीस की बादशाही है, इसलिए यह जाहिरी अर्थ लेने वालों का रास्ता रोक देता है। दुनियां वाले जाहिरी इल्म से खुदा की सूरत को पहचान नहीं सकते।

बका पोहोंच्या एक महंमद, कही जिनकी तीन सूरत।
तित और कोई न पोहोंचिया, जो लई इनो बका खिलवत।। ७३ ।।

अखण्ड परमधाम में केवल एक मुहम्मद पहुंचे जिनकी तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी कही हैं। इन्होंने ही अखण्ड परमधाम में मूल-मिलावे की हकीकत को जाना। जहां और कोई नहीं पहुंच पाया।

Nijanand App

देसी हकीकत सब असौं की, नूर जमाल सूरत।
केहेसी निसबत वाहेदत, रखे न खतरा बीच खिलवत।।७४ ।।

मुहम्मद साहब के हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की और पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान कराएंगे और वहां खुदा और मोमिन एक तन हैं इसकी लीला का वर्णन करने में कोई संकोच नहीं करेंगे।

सरत करी जो रसूले, सो पोहोंच्या आए बखत।
तिन इमाम को न समझे, जिनपे कुंजी कयामत।।७५ ।।

रसूल साहब ने आने का जो वायदा किया था, वह आ गए हैं। इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज जिनके पास तारतम ज्ञान की कुंजी और खोलने की कला है, के स्वरूप की पहचान नहीं करते।

बका से आए रूह अल्ला, और महंमद मेहेंदी इमाम।
मैं जो करी मजकूर, सो देसी साहेदी तमाम।।७६ ।।

अखण्ड परमधाम से रूह अल्लाह (श्री देवचन्द्र जी, श्री श्यामा महारानी) और मुहम्मद इमाम मेंहदी प्राणनाथजी आ गए हैं। वह रसूल साहब और खुदा के बीच जो बातें हुई हैं, उनकी गवाही देंगे।

कुरान माजजा नबी नबुवत, दोऊ साबित होवें तब।
दज्जाल मारके एक दीन, आए रूह अल्ला करसी जब।।७७ ।।

कुरान के रहस्य और रसूल साहब की पैगम्बरी तब सिद्ध होगी जब रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) दूसरे तन श्री प्राणनाथजी के अन्दर आकर शैतान को मारकर एक दीन पर सब को चलाएंगे, अर्थात् एक पारब्रह्म के पूजक बनाएंगे।

मसी और इमाम, जब देसी मेरी साहेदी।
मैं गुझ करी नूर जमाल सों, सो होसी जाहेर बुजरकी।।७८ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि जब ईसा (श्री श्यामाजी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी संसार में आकर कुरान में लिखी बातों की गवाही देंगे तो मैंने जो बातें की थीं वह छिपी बातें जाहिर हो जाएंगी।

मै दुनियां ल्याया जो दीन में, सो मैं देखत हों अब।
फिरके होसी मेरे तेहेत्तर, आखिर होएगी तब।।७९ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैंने जो इस्लाम धर्म शुरू किया है उसको अब मैं देखता हूं कि आखिरत होने तक मेरे दीन के तिहत्तर टुकड़े हो जाएंगे।

तब ए बुजरक आवसी, साहेब जमाने के।
हक करसी हिदायत तिनको, इनों संग नाजी फिरका जे।।८० ।।

तब इमाम मेंहदी साहब आखिर जमाने के खाविंद जाहिर होंगे। इमाम मेंहदी साहब जिनके साथ मर्दों की (मोमिनों की) जमात होगी, उनको खुद समझाएंगे।

हरफ गुझ जो हुकमें, मैं रखे छिपाए।
सो अर्स मता हक खिलवत, जाहेर करसी आए।।८१ ।।

खुदा के हुकम से मैंने जो मारफत के तीस हजार हरफ छुपाकर रखे हैं उनमें अखण्ड घर की, श्री राजजी की, मूल-मिलावा की सब हकीकत है, जिसे इमाम मेंहदी आकर जाहिर करेंगे।

Nijanand App

मता सब मेयराज का, किया अर्स में हकें मजकूर।
जो मेहेर हमेसा मुझ पर, सो ए सब करसी जहूर।। ८२ ।।

पारब्रह्म से मेयराज में घर जाकर मैंने जो बातें कीं, वह उस पारब्रह्म की कृपा से ही हुईं। अब उन सब बातों को इमाम मेंहदी आकर संसार में जाहिर करेंगे।

और फिरके सब आवसी, और सब पैगंमर।
होसी हिसाब सबन का, हाथ हकी सूरत फजर।। ८३ ।।

हकी सूरत श्री प्राणनाथजी के सामने सब फिरके तथा सभी पैगम्बर आएंगे और सबको ज्ञान देकर न्याय करेंगे।

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, खुले ना बिना खिताब।
गुझ बातून होसी जाहेर, जब हक लेसी हाथ किताब।। ८४ ।।

यह बात कुरान में जाहिर लिखी है, परन्तु जिनके सिर आखिरी खिताब इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी हैं उनके बिना यह भेद नहीं खुलेंगे। जब वह स्वयं कुरान का ज्ञान हाथ में ले लेंगे तो कुरान के सारे रहस्य जाहिर हो जाएंगे।

हक जाहेर हुए बिना, मेरी बड़ाई जाहेर क्यों होए।
कायम सूर ऊगे बिना, क्यों चीन्हे रात में कोए।। ८५ ।।

जब तक पारब्रह्म इमाम मेंहदी के रूप में जाहिर नहीं होते तब तक रसूल साहब कहते हैं कि मेरी बड़ाई कैसे जाहिर होगी? जब तक अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय नहीं होगा तब तक मुझे अंधेरे में कौन पहचानेगा?

अर्स कह्या दिल मोमिन, सब अर्स में न्यामत।
कह्या और दिलों पर अबलीस, अब देखो तफावत।। ८६ ।।

मोमिनों का दिल अर्श कहा है। जहां अर्श है, वहीं सब खजाना है (न्यामत है)। दुनियां के दिलों पर अबलीस शैतान की हुकूमत है। अब इन दोनों का फर्क देखो।

मोमिन हक बिना कछू ना रखें, करी मुरदार चौदे तबक।
महंमदें मोमिनों राह ए दई, ए राह क्यों ले हवाई खलक।। ८७ ।।

मोमिन पारब्रह्म के सिवाय कोई चाहना नहीं रखते। इन्होंने चौदह तबकों को मुरदार समझकर छोड़ दिया है। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने और सुन्दरसाथ ने यह रास्ता चलकर दिखाया। इस रास्ते पर निराकार के पूजक नहीं चल सकते।

महामत कहे ए मोमिनों, राह बका ल्योगे तुम।
जिन का दिल अर्स कह्या, औरों ना निकसे मुख दम।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अखण्ड घर के इस रास्ते पर तुम ही चलोगे, क्योंकि तुम्हारे ही दिल में पारब्रह्म विराजे हैं। किसी और के अन्दर ऐसा करने की ताकत नहीं है।

Nijanand App